रोहतास महिला महाविद्यालय, सासाराम.

अध्ययन सामग्री : संस्कृत.

स्नातक भाग-2, पत्र- चतुर्थ

डॉ॰ सावित्री सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर
संस्कृत विभाग

Topic: अभिज्ञानशाकुन्तलम् में प्रकृति चित्रण

आलम्बन के रूप में प्रकृति चित्रण : नाटक की प्रकृति के कारण आलम्बन के रूप में प्रकृति चित्रण का अवसर कम ही होता है। आरम्भ में ही ग्रीष्म के दिनों का संक्षिप्त वर्णन किया गया है :

सुभगसलिलावगाहाः पाटलसंसर्गिसुरभिवनवाताः ।
प्रच्छायसुलभनिद्राः दिवसाः परिणामरमणीयाः ॥

आश्रम का वर्णन करता हुआ श्लोक भी मनोहारी है :

नीवाराः शुकगर्भकोटरमुखभ्रष्टास्तरूणामधः
प्रस्निग्धाः क्वचिदिङ्गुदीफलभिदः सूच्यन्त एवोपलाः ।
विश्वासोपगमादभिन्नगतयः शब्दं सहन्ते मृगा-
स्तोयाधारपथाश्च वल्कलशिखानिष्यन्दरेखाङ्किताः ॥

उद्दीपन के रूप में चित्रण

अभि॰ शा॰ में मानव हृदय के भावों के उद्दीपन के रूप में भी प्रकृति चित्रण के उदाहरण प्रस्तुत हैं :

ईषदीषच्चुम्बितानि भ्रमरैः सुकुमारकेसरशिखानि ।
अवतंसयन्ति दयमानाः प्रमदाः शिरीषकुसुमानि ॥

चतुर्थ अंक में सम्पूर्ण प्रकृति शकुन्तला की विदाई के शोक में डूबी हुई चित्रित की गयी है। प्रियंवदा कहती है न केवलं तपोवनविरहकातरा सख्येव। त्वयोपस्थितवियोगस्य तपोवनस्य तावत्समवस्था दृश्यते -

उद्गलितदर्भकवला मृग्यः परित्यक्तनर्तना मयूराः ।
अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः ॥